

नरक की आग का वविरण (5 का भाग 5): नरक की भयावहता ॥

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख परलोक नरक की आग](#)

द्वारा: Imam Mufti

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

ईश्वर नरक के लोगों के चेहरे काले कर देगा:

"जसि दनि बहुत-से मुख उजले तथा बहुत-से मुख काले होंगे। फरि जनिके मुख काले होंगे उनसे कहा जायेगा: क्या तुमने वशिवास करने के बाद अवशिवास कर लिया था? तो अपने अवशिवास करने का दण्ड चखो।" (क़ुरआन 3:106)

उनके चेहरे ऐसे होंगे मानो रात ने उन्हें ढँक लिया हो:

"और जनि लोगों ने बुराईयाँ की, तो बुराई का बदला उसी जैसा होगा; उनपर अपमान छाया होगा और उनके लिए ईश्वर से बचाने वाला कोई न होगा। उनके मुखों पर ऐसे कालमि छायी होगी, जैसे अंधेरी रात के काले पर्दे, उनपर पड़े हुए हों। वही नरक में होंगे और वही उसमें सदावासी होंगे।" (क़ुरआन 10:27)

आग अवशिवासी को चारों तरफ से घेर लेगी, जैसे पापों ने उसे उसके शरीर के चारों ओर से घाव की तरह घेर लिया था:

"उनका आग का बसितर होगा और उनके ऊपर (आग का) आवरण होगा ..." (क़ुरआन 7:41)

"उस दनि (नरक की) यातना उन्हें उनके ऊपर से और उनके पैरों के नीचे से ढक देगी।" (क़ुरआन 29:55)

"...और नश्चय ही नरक अवशिवासियों को घेर लेगा..." (क़ुरआन 9:49)

नरक की आग दिलों तक पहुंच जाएगी। आग उनके बड़े आकार के पड्डों में प्रवेश करेगी और अंतरतम गहराई तक पहुंच जाएगी:

"कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही 'हुतमा' में फेंका जायेगा। और तुम क्या जानो कि 'हुतमा' क्या है? वह ईश्वर की भड़काई हुई अग्नि है, जो दिलों तक जा पहुँचेगी।" (क़ुरआन 104:4-7)

पैगंबर के वर्णन के अनुसार आग अंतड़ियों को तोड़ देगी:

"एक आदमी को क़यामत के दिन लाया जाएगा और आग में डाल दिया जाएगा। तब उसकी अंतड़ियों को आग में बहा दिया जाएगा और वह पागल गधे की तरह इधर उधर घूमेगा। नरक के लोग उसके चारों ओर इकट्ठा होंगे और कहेंगे, 'अरे फलाने, तुम्हें क्या हुआ है? क्या तुमने हमें भलाई करने की आज्ञा नहीं दी और हमें गलत काम करने से नहीं रोका?' वह कहेगा, 'मैं तुझे भलाई करने की आज्ञा देता था, परन्तु खुद नहीं करता था और तुझे बुराई करने से मना करता था, परन्तु स्वयं करता था।' तब वह पागल गधे की तरह इधर उधर घूमता रहेगा।"[\[1\]](#)

ईश्वर ने नरक की जंजीरों, पट्टियाँ और तौक़ का वर्णन किया है। उन्हें जंजीरों से बांधा जाएगा और उनकी गर्दन पर तौक़ बांध के घसीटा जाएगा:

"ठुकराने वालों के लिए हमने लोहे की जंजीरें, तौक़ और धधकती आग तैयार की है।" (क़ुरआन 76:4)

"वस्तुतः, हमारे पास (उनके लिए) बहुत-सी बेड़ियाँ तथा दहकती अग्नि है, और भोजन, जो गले में फंस जाये और दुःखदायी यातना है।" (क़ुरआन 73:12-13)

"हम अवशिवासियों की गर्दनों पर तौक़ डालेंगे। यह केवल उनके बुरे कर्मों का बदला होगा।" (क़ुरआन 34:33)

"जब तौक़ होंगे उनके गलों में तथा बेड़ियाँ, वे खींचे जायेंगे।" (क़ुरआन 40:71)

"(आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और उसके गले में तौक़ डाल दो, फिर नरक में उसे झोंक दो, फिर उसे एक जंजीर में जकड़ दो जिसकी लम्बाई सत्तर गज है।" (क़ुरआन 69:30-32)

मूर्तपूजक देवताओं और अन्य सभी देवताओं को जनिकी ईश्वर के अलावा पूजा की जाती थी, जिन्हें लोगों ने सोचा था कि वे ईश्वर के लिए उनके मध्यस्थ होंगे और उन्हें उसके करीब ले जायेंगे, उनके साथ नरक में फेंक दिया जाएगा। यह अपमानित करने और प्रदर्शित करने के लिए होगा कि इन झूठे देवताओं में कोई शक्ति नहीं है,

"नश्चय तुम सब तथा तुम जनि (मूर्तियों) को पूज रहे हो ईश्वर के अलावा, [2] नरक के ईंधन है, तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो। यदि वे वास्तव में पूज्य होते, तो नरक में प्रवेश नहीं करते और प्रत्येक उसमें सदावासी होंगे।" (कुरआन 21:98-99)

जब अवशिवासी नरक को देखेगा, तो वह पछतावे से भर जाएगा, लेकिन इससे कोई लाभ नहीं होगा:

"और वे दण्ड देखकर पछताएंगे; और उनका न्याय से नर्णय किया जायेगा और उनपर अत्याचार नहीं किया जायेगा।" (कुरआन 10:54)

अवशिवासी अपनी मृत्यु के लिए प्रार्थना करेंगे जब वे इसकी गर्मी महसूस करेंगे,

"और जब वह फेंक दिये जायेंगे उसके किसी संकीर्ण स्थान में बंधे हुए, (तो) वहाँ वनिश को पुकारेंगे। (उनसे कहा जायेगा:) आज एक वनिश को मत पुकारो, बहुत-से वनिशों को पुकारो।" (कुरआन 25:13-14)

उनकी चीखें और तेज़ होंगी और वे ईश्वर को इस उम्मीद से पुकारेंगे कि वह उन्हें नरक से बाहर निकाल दे:

"और वे उसमें चलियायेंगे: हे हमारे पालनहार! हमें निकाल दे, हम सदाचार करेंगे उसके अतिरिक्त, जो कर रहे थे।" (कुरआन 35:37)

वे अपने पापों और जदीदी अवशिवास की त्रुटि का एहसास करेंगे:

"और वे कहेंगे, "यदि हम सुनते या बुद्धि से काम लेते तो हम दहकती आग में पड़ने वालों में सम्मिलित न होते।" इस प्रकार वे अपने गुनाहों को स्वीकार करेंगे, तो धक्कार हो दहकती आगवालों पर!" (कुरआन 67:10-11)

उनकी प्रार्थना ठुकरा दी जाएगी:

"वे कहेंगे: हमारे पालनहार! हमरा दुर्भाग्य हम पर छा गया और वास्तव में, हम भटके हुए लोग थे। हमारे पालनहार! हमें इससे निकाल दे, यद अब हम ऐसा करें, तो नश्चय हम अत्याचारी होंगे।" वह (ईश्वर) कहेगा: इसीमें अपमानति होकर पड़े रहो और मुझसे बात न करो।" (कुरआन 23:106-108)

उसके बाद, वे नरक के रखवालों को बुलाएंगे कवि पीड़ा में कमी के लिए उनकी ओर से ईश्वर से हस्तक्षेप करने के लिए कहें:

"तथा कहेंगे जो अग्न में हैं, नरक के रक्षकों से: अपने पालनहार से प्रार्थना करो कहिमसे हल्की कर दे कुछ यातना कसी दनि। वे कहेंगे: क्या नहीं आये तुम्हारे पास, तुम्हारे रसूल, खुले प्रमाण लेकर? वे कहेंगे: क्यों नहीं? वे कहेंगे: तो तुम ही प्रार्थना करो और अवशिवासियों की प्रार्थना व्यर्थ ही होगी।" (कुरआन 40:49-50)

वे खुद को दर्द से मुक्त करने के लिए खुद के वनिश की भी गुहार लगाएंगे:

"तथा वे पुकारेंगे कहे मालकि! हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा परालनहार। वह कहेगा: तुम्हें इसी दशा में रहना है।" (कुरआन 43:77)

उन्हें बताया जाएगा कसिजा कभी कम नहीं होगी, यह शाश्वत है:

"इसमें प्रवेश कर जाओ, फरि सहन करो या सहन न करो, तुमपर समान है। तुम उसी का बदला दयि जा रहे हो, जो तुम कर रहे थे।" (कुरआन 52:16)

वे बहुत समय तक रोएंगे:

"तो उन्हें चाहिए कहेंसे कम और रोये अधकि। जो कुछ वे कर रहे हैं, उसका बदला यही है।" (कुरआन 9:82)

वे तब तक रोएंगे जब तक कसिब आंसू खत्म न हो जाएं, फरि वे खून के आंसू रोएंगे, जो अपने नशान छोड़ देगा जैसा की पैगंबर द्वारा वर्णति है:

"नरक के लोगों को रोने के लिए मजबूर कयि जाएगा, और वे तब तक रोएंगे जब तक कउनके सब आंसू खत्म न हो जाएं। फरि वे तब तक खून के आंसू रोएंगे जब तक कउनके मुंह पर रोने के नशान न हो जाये, और यदउन में जहाज डाले जाएं, तो वे तैरने लगे।"[\[3\]](#)

जैसा कि आपने देखा, इस्लामी धर्मग्रंथों में नरक का वर्णन स्पष्ट और चित्रात्मक है, जैसा कि उन लोगों के विवरण हैं जो उसमें अपने भाग्य के पात्र हैं। ऐसी स्पष्टता है कि कोई भी व्यक्ति जो न्याय के दिन और परलोक की शाश्वत न्याय में विश्वास करता है, उसे कम से कम अंदर फेंके गए लोगों से नहीं होने का प्रयास करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इस दुर्भाग्य से बचने का सबसे अच्छा और वास्तव में एकमात्र तरीका यह है कि सिद्धे धर्म की गंभीरता से खोज की जाए जैसा ईश्वर ने मानवता के लिए अनवरित किया है। एक व्यक्ति को कभी भी किसी धर्म का पालन केवल इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि उसने उस धर्म में "जन्म" लिया है, और न ही उन्हें धर्म को एक नए युग का फैशन मानना चाहिए। इसके बजाय, उन्हें इस दुनिया और आने वाले जीवन के बारे में सच्चाई को देखना चाहिए, और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उन्होंने उस फैसले के लिए तैयार किया है, जिसमें से कोई वापसी नहीं है, एक जीवन और विश्वास की प्रणाली को मान कर जैसा एक उच्च शक्ति के द्वारा प्रकट और अपरिवर्तित रखा गया है।

फुटनोट:

[1]

???? ??-???????, ???? ?????????

[2]

???? ????, अपने ?????? में, बताते हैं कि पहले के धार्मिक लोग और पैगंबर, जिन्हें बाद की पीढ़ियों द्वारा उनकी सहमति के बिना देवता माना गया था, उन्हें 'आग के लिए ईंधन' के रूप में शामिल नहीं किया गया है। केवल वे लोग जो उनके उपासकों द्वारा '???? ???? ???? ???? ??', ?? ?? ??? ?? ?????? ?????? ?? और अन्य नरिजीव मूर्तियों को उसमें फेंक दिया जाएगा। जिसस जैसे लोगों के बारे में कुरआन कहता है: "जनिके लिए पहले ही से हमारी ओर से भलाई का नरिणय हो चुका है, वही उससे दूर रखे जायेंगे..." (कुरआन 21:101)

[3]

???? ?????

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/383>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।